(1)

BRONCHO PNEUMONIA
&
PNEUMONIA

श्वासनली निमोनिया
तथा
निमोनिया

01612
1612

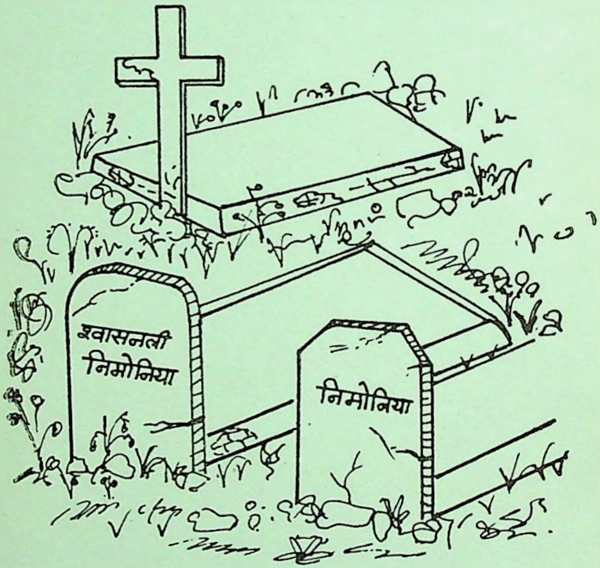

COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

श्वासनली निमोनिया
तथा
निमोनिया

ये दोनों रोग कई प्रकार के कीटाणु एवं वायरस के कारण होने वाले फेफड़ों के दीर्घकालीन रोग हैं।

निमोनिया के ये दोनों रोग "जान लेवा" माने जाते हैं। आजकल भारत में हर उम्र के लोगों, खासकर बच्चों की मृत्यु का प्रमुख कारण निमोनिया है।

अधिक उम्र वाले व्यक्ति और कम उम्र के बच्चे, विशेषकर जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं होता या जिन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिलता, वे फेफड़ों के दीर्घकालीन संक्रमण रोग से जल्दी मर जाते हैं।

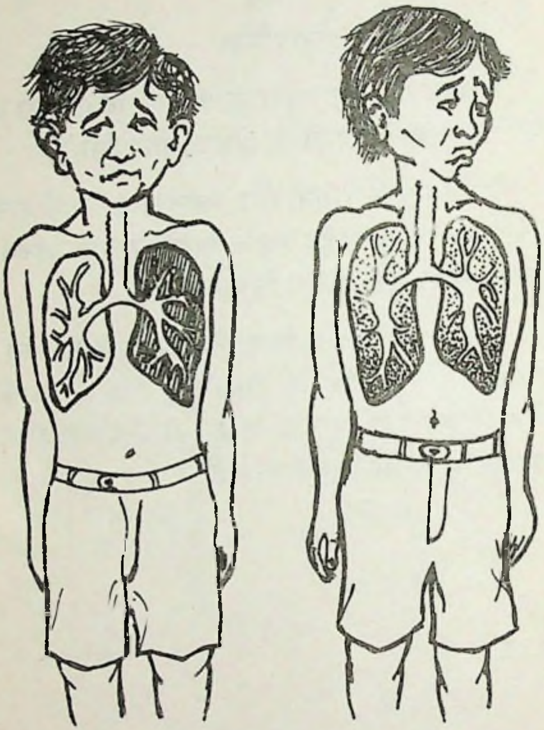

01612
COMH 321

COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

श्वासनली निमोनिया व निमोनिया में अंतर

इन दोनों रोगों में अंतर फेफड़ों में रोग के वितरण के कारण पाया जाता है।

श्वासनली निमोनिया में रोग दोनों फेफड़ों में, विशेषकर गुरुत्वाकर्षण के कारण निचले स्थान में, पूरी तरह फैल जाता है।

निमोनिया में रोग केवल एक फेफड़े के एक बड़े हिस्से में या पूरे फेफड़े में फैल जाता है।

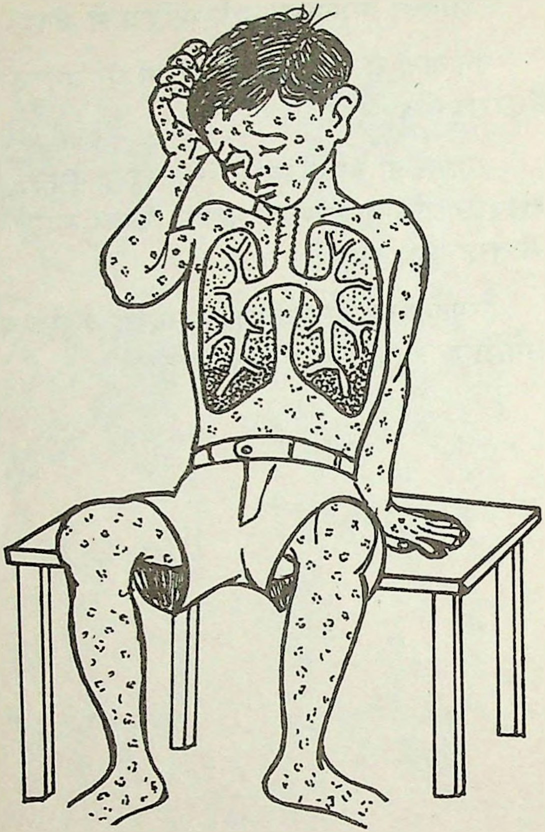

श्वासनली निमोनिया

यह रोग सामान्य रूप से बच्चों में होता है। यह हमेशा चेचक, काली खांसी, शीतला, फ्लू, ब्रंकाइटिस, दमा रोगों के कुसमायोजन से होता है।

लक्षण

सांस उथली और तेज चलने लगती है : प्रति मिनट 50 बार से अधिक;

बुखार तेजी से बढ़ता है और ठंड अधिक लगती है;

खांसी से बहुत तकलीफ होती है;

खांसने पर छाती में दर्द होता है;

पीले/हरे रंग का थूक आता है।

श्वासनली निमोनिया से ग्रस्त बच्चे बहुत ही कमजोर होते हैं। बच्चे भोजन करना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें भोजन की अपेक्षा हवा खाने की भूख अधिक लगती है। अंततः रोगी बहुत ही परेशान या उत्तेजित हो जाता है।

रोग दूर होने में 2 से 4 सप्ताह लगते हैं। कुछ दिनों में ही मृत्यु हो सकती है।

निमोनिया

निमोनिया जुकाम, ब्रांकाइटिस, फ्लू और दमा रोग के कुसमायोजन से होता है। यह वयस्कों में अधिक होता है, विशेषकर जिन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिलता।

वर्षा या समुद्री पानी में भीगने के बाद होने वाली ठंड ही इसका प्रारंभिक कारण है, या फिर पहाड़ी क्षेत्रों जैसी बर्फीली ठंड में घूमने से यह रोग होता है।

इसके लक्षण श्वासनली निमोनिया के समान ही होते हैं।

फिर भी इसमें छाती का बहुत भयंकर दर्द होता है। थूक का रंग पीला-हरा हो जाता है जिसमें थोड़ा-थोड़ा खून भी मिला होता है।

सांस लेने की कठिनाई के कारण नासा-रंध्रों में फैलाव आ जाता है।

रोगी बहुत अधिक बीमार दिखाई देता है।

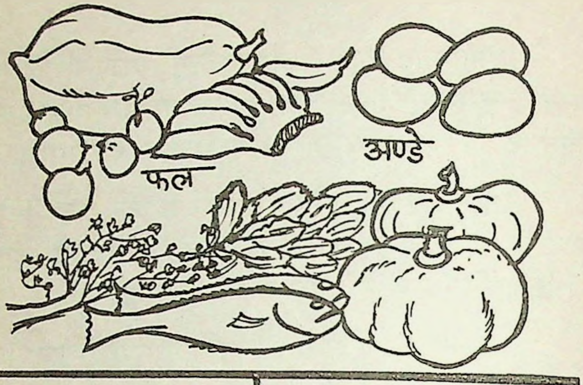

सामान्य उपचार

फलों का रस, मांस का सूप, शक्कर मिला हुआ (एक चुटकी नमक के साथ) पानी जैसे तरल पेय-पदार्थ अधिक दें। रोगी को सागभाजी, मछली, मुर्गी का मांस तथा समृद्री भोजन खाने के लिए देना चाहिए।

यदि रोगी भोजन करने से मना करता है तो उबला अंडा, दूध, सोयाबीन का दही, चावल का मांड या ऐसे ही अन्य पदार्थ दें जिन्हें बिना चबाये ही सीधा निगला जा सकता है।

नाक की सफाई करने के लिए या बंद नाक खोलने के लिए भाप लेनी चाहिए। इससे खांसी से भी आराम मिलता है।

यदि बुखार 38.5° से. से अधिक हो जाए तो हर 4 से 6 घंटे के बाद एस्प्रिन देना चाहिए।

- 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में एस्प्रिन उल्टा असर करती है।
- पैरासिटमॉल की दवा या गोली दी जा सकती है।

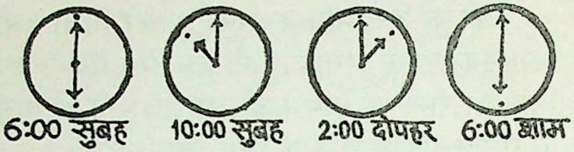

500 मि.ग्रा. की सल्फा की गोलियां

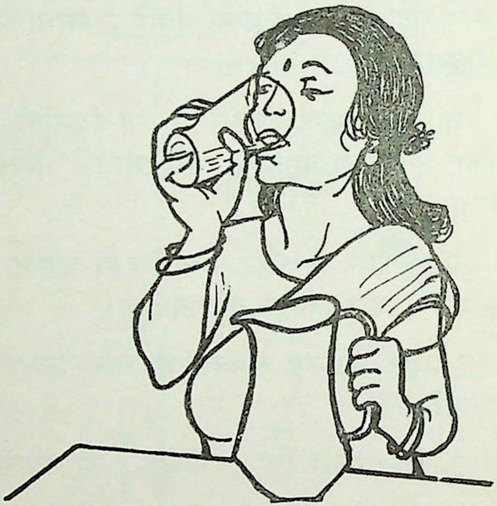

विशिष्ट उपचार

पेनिसिलीन से कई लोगों को बचाया जा चुका है लेकिन पेनिसिलीन की खोज से पहले सल्फा दवा से कई लोगों को बचाया गया था।

सल्फा से पेनिसिलीन अधिक प्रभावशाली है लेकिन सल्फा सस्ती पड़ती है।

सल्फा की खुराक
(सल्फाथियोजोल, सल्फाडायजोन)

वयस्कों के लिए : 50 मि.ग्रा. की गोली एक दिन में चार बार।

गुर्दों को नुकसान से बचाने के लिए सल्फा के साथ बहुत अधिक मात्रा में पेय पदार्थ भी देना चाहिए।

बच्चों को सल्फा की दवा **नहीं** देना ही ठीक रहता है।

01612
COMH 321
COMMUNITY HEALTH CELL
326, V Main, I Block
Koramangala
Bangalore-560034
India

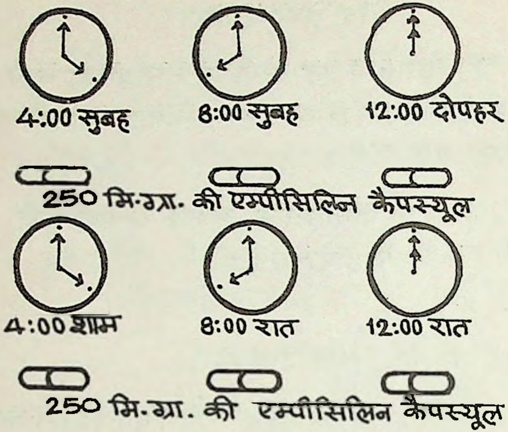

पेनिसिलीन की खुराक :

I. इन्जेक्शन द्वारा

पेनिसिलीन से होने वाली एलर्जी की जांच के लिए पहले दवा की थोड़ी मात्रा देकर त्वचा-संवेदन की परीक्षा कर लेनी चाहिए।

अधिक बढ़ गये संक्रमण रोग के लिए तेजी से व शीघ्र ही प्रभाव डालने वाला क्रिस्टोलाइन पेनिसिलीन का उपयोग करना चाहिए।

वयस्कों के लिए - हर चार से छः घंटे के अंतर से दस लाख यूनिट मात्रा का इन्जेक्शन दें।

बच्चों की उम्र के हिसाब से वयस्कों को दी जाने वाली मात्रा का आधा या चौथाई भाग बच्चे को दें।

II. खाने के लिए पेनिसिलीन – एम्पीसिलीन

वयस्कों के लिए - 250 मि.ग्रा. की कैपस्यूल हर 4 से 6 घंटे के अंतर से।

500 मि.ग्रा. की कैपस्यूल हर 8 से 12 घंटे के अंतर से।

पेट में अम्लीयता से बचने के लिए भोजन के बाद कैपस्यूल को खाने के लिए दिया जाना ठीक रहता है।

प्रश्न

1. निमोनिया और श्वासनली निमोनिया क्या है?
2. इनके लक्षण क्या हैं?
3. निमोनिया और श्वासनली निमोनिया के लिए सामान्य उपचार के नाम दीजिए।
4. निमोनिया का विशिष्ट उपचार क्या है?

निमोनिया का इलाज किया जा सकता है।

इस श्रृंखला के शीर्षक

1. श्वासनली निमोनिया तथा निमोनिया
2. सामान्य आंत्र परजीवी
   (गोल-कृमि और सूचि-कृमि)
3. पोलियो, बाल पक्षाघात, पोलियोमैलिटिस
4. कान
5. आंखें
6. क्षयरोग तथा क्षयरोग की रोकथाम
7. दांत तथा मसूड़े
   दांतों की सामान्य देखभाल
8. कुष्ठरोग
9. त्वचा के सामान्य रोग
10. खुजली

Published by the Catholic Hospital Association of India,
157/6, Staff Road, Secunderabad-500 003.